नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रेत माफिया पर निर्णायक प्रहार की जरूरत

नदियों से अवैध रेत खनन अब केवल कानून-व्यवस्था का मुद्दा नहीं, बल्कि पर्यावरण और शासन की विश्वसनीयता पर गंभीर सवाल बन चुका है. नर्मदा, सोन और चंबल जैसी नदियों में जिस तरह रेत माफिया सक्रिय है, उससे साफ है कि बिना प्रशासनिक मिलीभगत के इतना बड़ा अवैध कारोबार संभव नहीं.

जबलपुर, धार, खरगोन, खंडवा, बड़वानी और नर्मदा के किनारे बसे अन्य जिलों की स्थिति बेहद चिंताजनक है.दरअसल, सोन नदी के प्रतिबंधित क्षेत्रों में भी माफिया बेखौफ सक्रिय है. हाल ही में रामपुर नैकिन क्षेत्र में सशस्त्र बल के साथ की गई कार्रवाई में नौ हाईवा वाहन जब्त किए गए. यह दिखाता है कि प्रशासन चाहे तो कार्रवाई संभव है. संजय टाइगर रिजर्व और अन्य अभयारण्यों के अधिकारियों की संयुक्त कार्रवाई सराहनीय है, लेकिन ऐसी पहलें नियमित क्यों नहीं बन पातीं, यह चिंता का विषय है. इधर, चंबल क्षेत्र में अवैध खनन को लेकर सुप्रीम कोर्ट की नाराजगी ने पूरे मामले को और गंभीर बना दिया है. न्यायालय ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि अवैध खनन पर रोक नहीं लगी तो जिम्मेदार अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई होगी. यह केवल प्रशासन के लिए नहीं, बल्कि पूरे तंत्र के लिए एक सख्त संदेश है. मुरैना में एसएएफ जवानों की तैनाती और निगरानी के लिए कैमरे लगाने की पहल सही दिशा में कदम है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं.

दरअसल समस्या यह है कि रेत माफिया एक संगठित नेटवर्क के रूप में काम करता है, जिसमें स्थानीय स्तर से लेकर उच्च स्तर तक की मिलीभगत शामिल होती है. जब तक इस पूरे नेटवर्क को तोड़ने के लिए ठोस और निरंतर रणनीति नहीं बनाई जाएगी, तब तक छिटपुट कार्रवाइयों से कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा.

अवैध खनन का असर केवल कानून तक सीमित नहीं रहता. इससे नदियों का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है, जलस्तर गिरता है और पर्यावरण को गहरा नुकसान होता है. नर्मदा और चंबल जैसी नदियां करोड़ों लोगों की जीवनरेखा हैं, जिनका संरक्षण अनिवार्य है.सरकार को चाहिए कि रेत खनन के लिए पारदर्शी व्यवस्था लागू करे और तकनीक का उपयोग बढ़ाए. साथ ही, अवैध खनन में शामिल किसी भी व्यक्ति,चाहे वह अधिकारी हो या जनप्रतिनिधि, सभी पर सख्त कार्रवाई हो.

सरकार को चाहिए कि वह रेत खनन के लिए पारदर्शी और सख्त नीति लागू करे. ई-टेंडरिंग, जीपीएस ट्रैकिंग और रियल-टाइम मॉनिटरिंग जैसी तकनीकों का प्रभावी उपयोग किया जाए. साथ ही, अवैध खनन में लिप्त पाए जाने वाले अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के खिलाफ भी बिना किसी दबाव के कार्रवाई हो. केवल निचले स्तर के कर्मचारियों पर कार्रवाई कर देने से समस्या का समाधान नहीं होगा.

दरअसल, अब समय आ गया है कि रेत माफिया के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए, वरना नदियों के साथ-साथ शासन की साख भी खतरे में पड़ जाएगी. सुप्रीम कोर्ट की चेतावनी को अंतिम संकेत मानते हुए यदि अब भी ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो जीवनदायिनी नदियां पूरी तरह से तबाह हो जाएंगी. रेत माफिया का नाश केवल कानून लागू करने का सवाल नहीं, बल्कि भविष्य बचाने की अनिवार्यता भी है.

बिहार में सत्ता परिवर्तन का राजनीतिक संदेश

श्याम यादव
(राजनीतिक टिप्पणीकार)

> भारतीय राजनीति में जश्न सिर्फ खुशी जताने का माध्यम नहीं, बल्कि शक्ति प्रदर्शन का एक स्थापित तरीका बन चुका है. यहां छोटी-छोटी जीत को भी बड़े आयोजन में बदल देना एक सामान्य राजनीतिक प्रवृत्ति है, जहां उत्सव के जरिए यह संदेश दिया जाता है कि सत्ता सिर्फ हासिल नहीं की गई, बल्कि उसे पूरे आत्मविश्वास के साथ प्रदर्शित भी किया जा रहा है.

बिहार में राजनीतिक बदलाव के बाद जो तस्वीर सामने आई, वह इस स्थापित परंपरा से अलग नजर आ रही है. भारतीय जनता पार्टी, जो सामान्यत: हर जीत को सार्वजनिक उत्सव में बदलने के लिए जानी जाती है, जब पहली बार राज्य में अपना मुख्यमंत्री बनाने की स्थिति में पहुंचती है और फिर भी कोई बड़ा जश्न दिखाई नहीं देता, तो यह चुप्पी अपने आप में एक राजनीतिक प्रश्न बन जाती है. यह कहना आसान है कि इसके पीछे कोई स्पष्ट कारण नहीं है, लेकिन सियासत में 'बिना कारण' कुछ भी नहीं होता. कई बार कारण सामने नहीं रखे जाते, बल्कि संकेतों में व्यक्त होते हैं. बिहार का यह घटनाक्रम भी कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है, जहां चुप्पी खुद एक संदेश बनकर उभर रही है.

पहला संकेत राजनीतिक असहजता का हो सकता है. बिहार की राजनीति का स्वभाव स्थिर नहीं रहा. यहां समीकरण तेजी से बदलते हैं और सत्ता का संतुलन अक्सर परिस्थितियों पर निर्भर करता है. ऐसे में संभव है कि जश्न को लेकर सावधानी बरती गई हो, ताकि कोई संदेश अनावश्यक रूप से तीखा या असंतुलित न हो जाए.

दूसरा पहलू गठबंधन की राजनीति का है. बिहार में सत्ता की संरचना केवल एक दल के उत्साह से तय नहीं होती, बल्कि सहयोगियों के संतुलन से भी संचालित होती है. ऐसे में अत्यधिक उत्सवधर्मिता सहयोगी दलों के लिए असहजता का कारण बन सकती है. इसलिए संयमित रवैया अपनाना एक व्यावहारिक राजनीतिक निर्णय भी माना जा सकता है.

तीसरा, हाल के राजनीतिक संकेतों ने भी स्थिति को पूरी तरह सहज नहीं रहने दिया है. कुछ घटनाक्रमों ने यह स्पष्ट किया है कि सत्ता का समीकरण जितना दिखाई देता है, उससे कहीं अधिक जटिल है. ऐसे संकेत अक्सर सार्वजनिक नहीं होते, लेकिन उनके प्रभाव निर्णयों में साफ नजर आते हैं—जैसे इस बार जश्न का अभाव. एक महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि क्या सत्ता की यह स्थिति पूरी तरह स्थिर और आत्मविश्वास से भरी हुई है! जब परिस्थितियां स्पष्ट होती हैं, तब जश्न भी उसी स्पष्टता और ऊर्जा के साथ सामने आता है. लेकिन, जब स्थिति में अनिश्चितता का तत्व मौजूद हो, तो उत्सव अपने आप सीमित हो जाता है. बिहार का यह मौन उसी सीमित उत्साह की ओर संकेत करता है.

भारतीय जनता पार्टी की राजनीतिक शैली सामान्यत: आक्रामक और उत्सवधर्मी रही है. ऐसे में यह संयमित चुप्पी उसके स्वभाव से अलग नजर आती है. जब कोई दल अपने स्वाभाविक व्यवहार से हटकर चलता है, तो यह संकेत होता है कि परिस्थितियां साधारण नहीं हैं, बल्कि उन्हें संतुलित ढंग से साधने की आवश्यकता है. इस पूरे परिदृश्य में कार्यकर्ताओं की मन:स्थिति भी महत्वपूर्ण है, जो कार्यकर्ता हर छोटी जीत पर भी सड़कों पर उतरने के आदी रहे हैं, उनके बीच यह सवाल स्वाभाविक है कि जब सबसे बड़ा अवसर था, तब जश्न क्यों नहीं! यह प्रश्न सिर्फ उत्सव का नहीं, बल्कि उस राजनीतिक ऊर्जा का है, जो किसी भी दल की असली ताकत होती है.

अंतत:, बिहार में जश्न का अभाव एक साधारण घटना नहीं, बल्कि एक गहरा राजनीतिक संकेत है. यह संकेत बताता है कि सत्ता तक पहुंचने के बावजूद परिस्थितियां पूरी तरह निर्विवाद और सहज नहीं हैं. यहां संतुलन, सावधानी और परिस्थितियों की समझ तीनों मिलकर निर्णय तय कर रहे हैं.

बिहार की इस चुप्पी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सियासत में हर जीत जश्न में नहीं बदलती कुछ जीतें ऐसी भी होती हैं, जिन्हें संभालकर रखा जाता है और उनका उत्सव समय के भरोसे छोड़ दिया जाता है.

मालवा- निमाड़ की डायरी

प्रताप करोसिया की विदाई के मायने

संजय व्यास

अंतत: मप्र राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष और दर्जा प्राप्त कैबिनेट मंत्री प्रताप करोसिया की विदाई हो गई. इंदौर के भाजपा नेता प्रताप करोसिया को आयोग अध्यक्ष पद से यूं तो अचानक हटाया गया है, पर पर्दे के पीछे कहानी कुछ ओर है. उन्हें पदच्यूत करने की पटकथा उस समय से चल रही थी, जब पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन के बेटे के शोरूम पर प्रताप करोसिया के भतीजे ने तोडफ़ोड़ की थी.

पुलिस प्रकरण के बाद गहराए विवाद में करोसिया की शह पर उनके भतीजे ने सुमित्रा महाजन के साथ केबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को मामले में आड़े हाथ लिया था और उन पर गंभीर आरोप लगाए थे. उनके अनुसार 6 दिसंबर को उन पर विविध धाराओं में केस दर्ज हुआ था. फिर उक्त नेताओं के दखल के बाद इसमें 9 दिसंबर को गैर जमानती धाराएं बढ़ीं और इन्हें गिरफ्तार कर कान पकडक़र माफी मंगवाई गई और जुलूस निकाला. तब से विजयवर्गीय प्रताप करोसिया से खफा चल रहे थे और उनकी सफाई कर्मचारी आयोग से रवानगी के लिए पार्टी नेतृत्व पर दबाव बनाए हुए थे. किन्हीं कारणों से एक्शन टलता जा रहा था और उनके 3 साल की कार्यावधि का इंतजार किया गया. आखिर नई राजनीतिक नियुक्तियों की कवायद शुरू होने के साथ प्रताप करोसिया को सफाई कर्मचारी आयोग के पद से मुक्त कर दिया गया.

पद पर काबिज रहने करोसिया अड़े

राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष और दर्जा प्राप्त कैबिनेट मंत्री प्रताप करोसिया को पद से हटाने का फरमान जारी होते ही करोसिया समर्थकों में हडक़ंप मच गया है. अब यह मामला महज एक सामान्य विदाई नहीं बल्कि एक हाई-प्रोफाइल विवाद बन गया है. करोसिया ने इस आदेश को खुद के खिलाफ एक बड़ा षड्यंत्र करार देते हुए सीधे कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है. इस पत्र को करोसिया ने चुनौती दी कि नियुक्ति का आदेश सरकार या मंत्रालय से हुआ है. इस बार एक विभाग की ओर से सेवा समाप्ति का आदेश जारी कर दिया गया. वह भी ऐसे अधिकारी ने, जिन्हें इसका अधिकार ही नहीं है. आलम यह है कि एक तरफ विभाग ने उनकी सुविधाएं छीनने का आदेश दिया है, तो दूसरी तरफ करोसिया स्टे लेकर अपनी कुर्सी पर कब्जा बनाए रखने की जुगत में लगे हैं.

अब भारत आदिवासी पार्टी की निकायों पर नजर

2023 के विधान सभा चुनाव में रतलाम जिले की सैलाना सीट जीतकर मप्र में खाता खोलने वाली भारत आदिवासी पार्टी की नजर अब नगर निकाय चुनावों पर है. 2027 में होने वाले इन चुनावों में अपना दबदबा बनाने के लिए विधायक कमलेश्वर डोडियार को रतलाम और आसपास के क्षेत्रों की जिम्मेवारी पार्टी ने सौंप दी है. डोडियार इन दिनों गांव-गांव पार्टी विस्तार व सुदृढ़ता के लिए विभिन्न इकाइयों के गठन पर जोर दे रहे हैं. भीषण गरमी में भी घर बैठने के बजाए वे ग्राम-फलियों में चक्कर लगाते नजर आते हैं. साल भर बाद होने वाले स्थानीय निकाय चुनावों के मद्देनजर भारत आदिवासी पार्टी जिले में कार्यकर्ताओं को जोड़ पार्टी विस्तार कर रही है. डोडियार हाल ही में बाजना, सरवन, सैलाना और शिवगढ़ में ब्लॉक कार्यकारिणियों का गठन कर चुके हैं और जिले के पिपलोदा, रतलाम ग्रामीण और जावरा में भी पार्टी इकाइयां गठित करने की तैयारियों में लगे है. आदिवासी बहुल इस इलाके में अधिक से अधिक निकायों पर फतह की पार्टी की मंशा है.

भारतीय अर्थव्यवस्था अब छठे स्थान पर

भारतीय अर्थव्यवस्था 2022 में ब्रिटेन को पछाड़कर विश्व की 5वीं बड़ी इकोनॉमी बन गई थी. तब यह भारत के लिए गौरव का विषय था कि जिन अंग्रेजों ने 200 वर्ष भारत पर राज किया उन्हें हमने पीछे छोड़ दिया. तब जोर-शोर से उम्मीद की जा रही थी कि 2029 तक जर्मनी को पछाड़कर भारत चौथे नंबर की इकोनॉमी बन जाएगा लेकिन इस दौरान जर्मनी ने-तरक्की कर तीसरे स्थान पर मौजूद जापान को पीछे छोड़ दिया. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा जारी वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक में कहा गया कि भारत की 2026 की जीडीपी (देश में उत्पन्न सभी सामान और सेवाओं का कुल मूल्य) लगभग 4.15 खरब डॉलर होगी, जो 2025 के 3.92 खरब डॉलर से अधिक होगी. दूसरी ओर ब्रिटेन की जीडीपी बढ़कर 4.27 खरब डॉलर हो जाएगी, जो 2025 में 4 खरब डॉलर थी. 2025 में जापान की जीडीपी 4.48 खरब डॉलर थी, जो 2026 में घटकर 4.38 खरब डॉलर रह जाएगी. उल्लेखनीय है कि मई 2025 में नीति आयोग के सीईओ सीवीआर सुब्रमण्यम नेघोषित किया था कि जापान को पीछे छोड़कर भारत विश्व की चौथे नंबर की अर्थव्यवस्था बन गया है अर्थात अमेरिका, चीन व जर्मनी के बाद भारत का नंबर आता है. विगत 1 वर्ष के दौरान डॉलर काफी मजबूत हो गया और रुपए में गिरावट आई. आईएमएफ किसी देश की अर्थव्यवस्था का आकलन डॉलर के हिसाब से तय करता है. एक्सचेंज रेट में भारतीय रुपया कमजोर हो गया. भारत ने नए आधार (बेस) पर फरवरी 2026 में अपने जीडीपी अनुमानों को अपडेट किया. इससे पता चला कि पिछली जीडीपी सीरीज में जीडीपी का अधिक मूल्यांकन (ओवरएस्टीमेशन) कर लिया गया था. इसलिए 2025-26 के लिए भारत की जीडीपी 357 खरब से पीछे लाकर 345 खरब आंकी गई. अमेरिका और चीन की अर्थव्यवस्थाएं विश्व के अन्य देशों की तुलना में काफी बड़ी हैं. 2026 में अमेरिका की इकोनॉमी 32.28 खरब डॉलर तथा चीन की 20.85 खरब डॉलर रहने का अनुमान है. इसके नीचे के 4 देशों की इकोनॉमी 4 खरब डॉलर के आसपास चल रही हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

इस रिसर्च का आखिर क्या कहना गाय के दूध में होता है सोना

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज बंगाल बीजेपी के अध्यक्ष व लोकसभा सदस्य दिलीप घोष ने दावा किया कि देसी गाय के कूबड़ (हम्प) में सूर्य नाड़ी रहती है जिस पर सूर्य की किरणें पड़ने से सोना उत्पन्न होता है. गाय के दूध में यही सोना मिला रहता है. इसी वजह से उसके दूध का रंग सुनहरा या हल्का पीला होता है. हमारा ख्याल है कि ऐसी विस्मयजनक रिसर्च पर दिलीप घोष को विज्ञान का नोबल प्राइज दिया जाना चाहिए.'

हमने कहा, 'जब मानव शरीर में आयरन, फॉस्फोरस, कैल्शियम, मैग्नीशियम और जिंक हो सकता है तो गाय के दूध में सोना क्यों नहीं हो सकता? बीजेपी सांसद की आस्थापूर्ण खोज पर शक मत कीजिए. आपको मालूम होगा कि समूची दुनिया में केवल भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था. हमारे सभी राजा स्वर्णमुकुट पहनते थे और सोने के सिंहासन पर बैठते थे. इतिहास में गुप्त काल को स्वर्णयुग कहा गया है. तब सोने के सिक्के चला करते थे जिन्हें अशर्फी कहते थे. राजा-महाराजा किसी पर प्रसन्न होते थे तो उसे

स्वर्ण मुद्राओं से भरा थाल दिया करते थे. पुराणों में उल्लेख है कि ऐसी हजारों गाय दान दी जाती थीं जिनके सींग सोने से मढ़े रहते थे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, देश में सिर्फ कोलार गोल्ड फील्ड में काफी गहराई में सोना पाया जाता है. बड़ी चट्टान को तोड़ने पर थोड़ा-सा स्वर्ण निकलता है. फिर इतना सोना कैसे आया होगा?' हमने कहा, 'पुराने ऋषि-मुनि वैज्ञानिक थे जो अपनी आश्रमरूपी प्रयोगशाला में पारे से सोना बनाया करते थे. पारस पत्थर लोहे को स्पर्श कराओ तो वह भी तुरंत सोना बन जाता है. पुराने कीमियागर या अल्केमिस्ट ऐसे ही सोना बनाया करते थे. द्वारकापुरी में सत्राजित रहता था जिसे सूर्य भगवान ने एक चमत्कारी मणि दी थी. जब सूर्य मध्यान्ह में आता था तो उस मणि से सोने की वर्षा होने लगती थी.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, पुराने किस्से-कहानी मत सुनाइए. हमें लगता है कि गाय पर निबंध में बच्चे लिखेंगे-गाय के 4 पैर 2 सींग और पूंछ होती है. वह अत्यंत उपयोगी प्राणी है. देश-धर्म का नाता है, गाय हमारी माता है. गाय में 33 करोड़ देवताओं का वास होता है. इस निबंध में वह दिलीप घोष की रिसर्च भी जोड़ देंगे कि गाय के दूध में सोना होता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12235

- डॉ. सागर खादीवाला

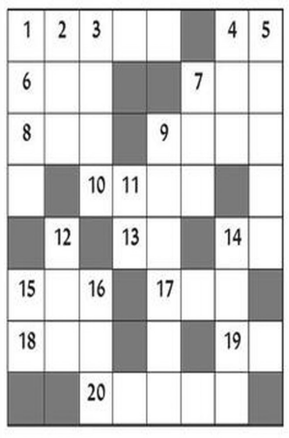

ऊपर से नीचे

1. दबाना, शांत करना (सं.) 2. अस्सी और तीन 3. पीड़ा जनित आवाज निकालना 4. सार्थक, जिसमें फल लगे हो, कामयाब 5. बैंक आदि का वह खाता जिसमें लेन-देन बराबर जारी रहे 7. अच्छा और योग्य पुत्र 9. हवाई जहाज चलाने वाला 11. बीच की उंगली, काव्य में नायिका का एक प्रकार (सं.) 12. प्रभाव (उर्दू) 14. योग का एक आसन जिसके द्वारा योगाभ्यास में शीघ्र सिद्धि होती है 15. क्रोध, रोष 16. नासमझ (उर्दू)

बाएं से दाएं

1. विरोध में किया जाने वाला काम (सं.) 4. सत्य, वास्तविक 6. अग्निकण, स्फुलिंग, चिनगारी (उर्दू) 7. उत्तम फल या परिणाम, अनार 8. ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा 9. आधिक्य, बहुतायत 10. केवल नाम के लिए 13. किसी के स्वरूप का चिंतन, विषय विशेष में चित्त की एकाग्रता 14. जानकार 15. गालियों के रूप में शाप देना, भला-बुरा कहना 17. खाना, चबाना 18. आड़ करने का कपड़ा, घूंघट, चिक, छिपाव (उर्दू) 19. संवत, साल, वर्ष 20. पिसे हुए नमक का रखने का पात्र

Solution 12234

सो	नि	या	गां	धी		न	भ
पा	त				सा	द	गी
न		ख	ल	ब	ली		र
	ब	र	क	त		सा	थ
ह	ड़	ब	ड़ी		म	नु	
	ब			ब	ह	ना	पा
त	ड़ा	त	ड़			सि	य
म	ना	ना		आ	ज	क	ल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अनावश्यक वाद विवाद होगा. मन में तनाव रह सकता है. व्यर्थ चिन्ताओं से कार्य में व्यवधान आयेगा. व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी. आकस्मिक क्रोध की स्थिति बन सकती है. शुभ समाचार प्राप्त होने का योग है. वर्ष के अन्त में नये स्त्रोतों मेंवृद्धि होगी. रूके कार्यो में गति आयेगी. धार्मिक कार्यो में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आय के नवीन स्त्रातों में वृद्धि होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का अधिकारी के सहयोग से लाभ होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को अनावश्यक विवादहो सकता है. सिंह राशि के व्यक्तियों के रूके कार्यो में गति आयेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शुभ समाचार मिलेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ का वाद विवाद से मुक्ति मिलेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ अधिक होगी. अत्याधिक क्रोध की स्थिति न आने दें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान भाग्यवान एवं दृढ़ निश्चयी होगा, निडर स्वाभाव का, शिक्षा में अग्रणी होगा, माता पिता के प्रति लगाव रहेगा, इसका भाग्योदय जन्मस्थान के पास होता है, अच्छे व्यापार के अवसर भी सामने आयेंगे.

उदयकालीन ग्रह चाल

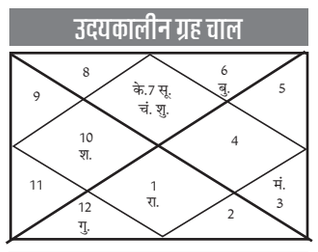

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2083 वैशाख शुक्ल चतुर्थी भौमवासरे दिन 8/13, रोहिणी नक्षत्रे प्रात: 5/57 तदुपरि मृगशिरा नक्षत्रे रातअंत 4/18, शोभन योगे दिन 4/32, विष्टि करणे सू.उ. 5/38, सू.अ. 6/22, चन्द्रचार वृषभ शाम 5/8 से मिथुन, शु.रा. 2,4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

वैशाख शुक्ल चतुर्थी को रोहिणी नक्षत्र के प्रभाव से लालमिर्च, केशर, रूई, तांबा, में नरमी होगी, बाद में तेजी होगी, जूट पाट, बारदाना, उड़द, मूग, मोठ के भाव में मंदी होगी, भाग्यांक 2356 है.

मेष- कार्यस्थल परसबकी जिम्मेदारी तय करें, कार्यों में वाछित सफलता मिलेगी, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा, स्त्री पक्ष की चिन्ता रहेगी.

वृषभ- न्यायालयीन कार्यों में सफलता मिलेगी, दिनचर्या नियमित रहेगी, कार्यों में सफलता मिलेगी, धन लाभ होगा. मनोरंजन में खर्च होगा.

मिथुन- मित्रों की मदद से बिखरे कार्य समेटने में मदद मिलेगी, सामाजिक मामले में पक्ष मजबूत होगा. अनावश्यक विवादों को टालें.

कर्क- कुटुम्बीयजनों से विवाद होगा, आर्थिक कार्यों में प्रगति होगी, किसी की जमानत देना कष्टप्रद हो सकता है, परिश्रम अधिक होगा.

सिंह- जोखिम से बचें, प्रयास सार्थक होगा, विवादों को न बढ़ायें, धर्म-कर्म में आस्था बढ़ेगी, कार्यों में सफलता मिलेगी, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

कन्या- पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा, मानसिक प्रसन्नता होगी, मांगलिक कार्यो में सफलता मिलेगी, यश प्राप्त होगी. सत्कर्म में खर्च होगा.

तुला- कानूनी मामलों में सावधानी से निर्णय लें, आत्म विश्वास बढ़ेगा, पुराने कार्य बनेंगे, पुरूषार्थ बना रहेगा,मानसिक संतोष रहेगा.

वृश्चिक- समय पर कार्य पूरा करने में परेशानी होगी, विरोधियों की चालों को समझनेक ा प्रयास करें, जमीन जायजाद के कार्य बनेंगे.

धनु- सहूलियत के हिसाब से कार्ययोजना में बदलाव कर लेंगे, अधिकारी आपकी बात से सहमत होंगे, उत्पन्न समस्याओं का समाधान होगा,पद का लाभ मिलेगा.

मकर- सामाजिक कार्यों में उपस्थिति नया रंग भर देगी, धर्म-कर्म में आस्था बढ़ेगी, राजनैतिक कार्यों में अनुकूलता रहेगी, उच्चाधिकारियों का सहयोग रहेगा.

कुम्भ- कामकाज में सुधार के लिये दिनरात एक कर देंगे, जरूरी काम के लिये सिफारिश करना पड़ सकती है, भाग्यवर्धक समाचार मिलेगा, विवादों को न बढ़ायें.

मीन- भावनात्मक संबंधों में मधुरता बढ़ेगी, स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पायेंगे, कुटुम्बियों के सहयोग से कार्यारंभ होगा, सक्रिय राजनीति में स्थान बढ़ेगा.

SUDOKU 7367

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7366

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1